B.A. II nd year
Sociology
Paper I - Social Control and Social Change
Reading material by - Prof Sangeeta Pandey.
Topic :- Patterns of Social Change

## Patterns of Social Change
## सामाजिक परिवर्तन के प्रतिमान

समाज में परिवर्तन की प्रक्रिया अनवरत रूप से चलती है, परिवर्तन समाज के प्रत्येक पक्ष में दृष्टिगत होता है। इसके विविध रूप होते हैं यह बहुआयामी है। इसकी भविष्यवाणी कठिन है तथा प्रत्येक पक्ष में होने वाला परिवर्तन किसी विशिष्ट प्रकार या स्वरूप का भी होता है। मैकाइवर एवं पेज ने अपनी पुस्तक सोसाइटी में किया है A परिवर्तन को समझने तथा विशिष्ट पक्षों में हो रहे परिवर्तनों में अन्तर स्पष्ट करने के लिए तीन प्रमुख प्रतिमानों का प्रयोग कर सकते हैं इसे ही वे 'परिवर्तन के प्रतिमान' (Patterns of change) या ways of Social Change से सम्बोधित करते हैं।

.... Since Change is so incessant, so hard to predict and so manifold, we must, if we are to grasp it at all, seek to discover some kind of order in change itself. The first thing to notice is that different subjects have their own particular ways of undergoing change we shall distinguish three patterns ~~data~~ characteristically associated with particular subjects ...." MacIver and Page; Society Page 519.

इस प्रकार समस्त सामाजिक परिवर्तन की घटनाओं को तीन प्रमुख प्रतिमानों के माध्यम से प्रदर्शित कर

Scanned by CamScanner

सकते हैं।

## Patterns of Social Change
## सामाजिक परिवर्तन के प्रतिमान

- Linear Change — समरेखीय परिवर्तन
- Boom and Depression Type — उतार चढ़ाववाद परिवर्तन
- Cyclical Change — चक्रीय परिवर्तन

**Linear Change समरेखीय परिवर्तन** → समाज के कुछ पक्षों में परिवर्तन की प्रकृति ऐसी होती है कि उसे एक रेखा के माध्यम से प्रदर्शित किया जा सकता है। यह रेखा या तो क्षैतिज हो सकती है या इसकी दिशा विकास की तरफ हो सकती है।

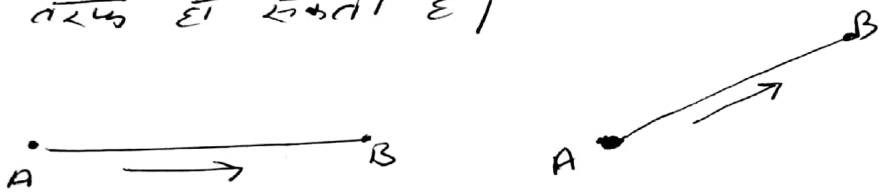




eg:- प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हो रहे परिवर्तनों को इसी प्रकार के प्रतिमान से प्रदर्शित किया जा सकता है।

Ogburn का विचार है कि इस प्रकार के परिवर्तन की विशेषता यह है कि इसमें उपयोगितावादी दृष्टिकोण को लिए हुए निरन्तर संचयी विकास होता है। मैकाइवर के शब्दों में - - What is distinctive of this mode of change is not its suddenness but continuous cumulative development of a utilitarian device, until perhaps it is discarded altogether by some new device that has also undergone a similar process.... (MacIver & Page Society Page 519)

उन्नीसवीं शताब्दी में जीव विज्ञान के क्रमिक विकास, को जिसमें डार्विन एवं मेन्डल के सिद्धान्त प्रमुख हैं, इसी प्रकार के परिवर्तन की श्रेणी में रखा जा सकता है।

Scanned by CamScanner

2. Boom and Depression Type:-
उतार-चढ़ावदार परिवर्तन — परिवर्तन का दूसरा प्रतिमान उतार-चढ़ावदार होता है। आर्थिक जगत और जनसंख्या के क्षेत्र में हो रहे परिवर्तन को हम इसके अन्तर्गत रख सकते हैं।

This mode of change is characteristic of economic phenomena and over longer periods of the phenomena of population. Cities grow and then decline, international trade advances and falls off, business activity rises, booms and then slumps... (MacIver and Page Society, Pg 520)

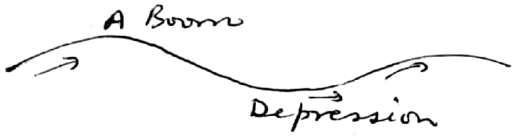




नगर विकसित होते हैं उनका ह्रास होता है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार उन्नत होता है और अवनत हो जाता है, व्यापारिक क्रिया कलाप उन्नत, विकसित अवनत हो जाते हैं। इस प्रकार के परिवर्तन (प्रतिमान) में निश्चितता नहीं होती।

3. Cyclical Change (pattern)
चक्रीय प्रतिमान

कुछ क्षेत्रों में परिवर्तन की प्रकृति ऐसी होती है कि इसे एक चक्रीय प्रतिमान के द्वारा व्यक्त किया जा सकता है। जैसे, मानवीय सभ्यता का विकासक्रम, फैशन जगत में हो रहे परिवर्तन का स्वरूप आदि। जिसप्रकार मौसम का चक्र- बरसात, जाड़ा, गर्मी पुनः बरसात, जाड़ा... एक वृत्ताकार क्रम प्रदर्शित करता है या मानव जीवन का क्रम (विकास) यथा - जन्म, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, प्रौढ़ावस्था, वृद्धावस्था और मृत्यु। सभ्यता के उत्थान और पतन में भी यही स्वरूप देखने को मिलता है। सभ्यतायें जन्म लेती हैं, धीरे 2 वे विकसित होकर, उन्नत स्वरूप में आती हैं और किसी कालखण्ड में उनका पतन भी हो जाता है। अर्थात परिवर्तन एक चक्रीय क्रम को प्रदर्शित करता मिलता है।

Scanned by CamScanner

इसी प्रकार फैशन के क्षेत्र में भी चक्रीय परिवर्तन स्वरूप या प्रतिमान प्रभावी दिखता है। फैशन का एक स्वरूप जो आज है वह बदलता है नया प्रतिमान आता है लेकिन बाद में पुराना स्वरूप पुनः आजाता है और यह चक्र चलता रहता है। Spengler ने Decline of the west में परिवर्तन के इसी प्रतिमान के आधार पर सभ्यताओं में परिवर्तन को स्पष्ट किया है -

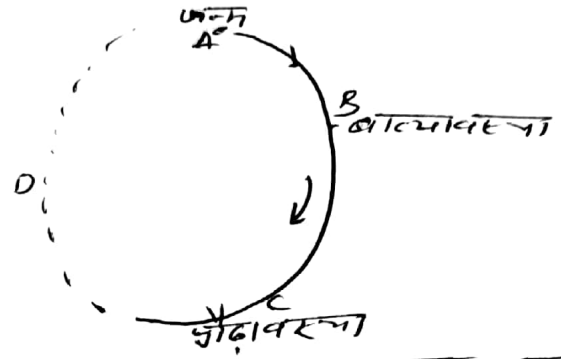


सोरोकिन ने 'सोशल एण्ड कल्चरल डायनेमिक्स' में स्पष्ट किया कि सदैव पूर्ण चक्र, सांस्कृतिक परिवर्तनों में नहीं भी मिलते हैं वे fluctuations (पूर्व स्वरूप से भिन्न) के रूप में सांस्कृतिक परिवर्तन को स्पष्ट करते हैं।

वास्तव में सामाजिक परिवर्तन इतनी जटिल अवधारणा है कि इसे पूर्ण रूप से इन तीन प्रतिमानों द्वारा नहीं स्पष्ट किया जा सकता। समाज में अनेक गुणात्मक परिवर्तन भी होते हैं उनको एक निश्चित प्रतिमान में नहीं बाँध सकते। केवल अध्ययन की सुविधा हेतु उपरोक्त तीन प्रतिमानों को प्रयोग किया जाता है।

Scanned by CamScanner